कुलगीत

हम स्वागत सबका करते हैं।
सबका स्वागत हम करते हैं।।

बूला-गुलाल, भीखा-पलटू की छटा यहाँ पर छायी है।
सदियों से यह धरती अपनी संतों को जनती आयी है।
संकल्प करो वह मिल जाता सपनें साकार उतरते हैं।।

हम स्वागत सबका करते हैं।
सबका स्वागत हम करते हैं।।

इक हलवाहे के चरणों पर रख दी ठाकुर ने ठुकराई।
दोनों को दिव्य प्रकाश मिला भुड़कुड़ा पड़ा तब दिखलाई।
शापों से मुक्ति यहाँ मिलती लोगों के जन्म संवरते हैं।

हम स्वागत सबका करते हैं।
सबका स्वागत हम करते हैं।।

यह भूमि जहाँ औघड़ सतनामी दो सन्तों का मिलन हुआ।
भीखा से कीनाराम मिलकर एक नयी कथा का चलन हुआ।
मिलती है दृष्टि यहाँ ऐसी संकट से सभी उबरते हैं।

हम स्वागत सबका करते हैं।
सबका स्वागत हम करते हैं।।

समता, स्वतंत्रता, बंधु-भाव यह संतों की भी शिक्षा है।
ये मूल्य सभी आचरण बने इस ज्ञान केन्द्र की दीक्षा है।
कोई भी अग्नि परीक्षा हो हम कहाँ किसी से डरते हैं।

हम स्वागत सबका करते हैं।
सबका स्वागत हम करते हैं।।

भीखा, गुलाल, रामाश्रय के थल पर सबका अभिनन्दन है।
हर आगन्तुक है देव तुल्य हर प्राणी का शतवन्दन है।
पग-पग दिशि-दिशि मिलता सुवास चाहे जिस राह गुजरते हैं।

हम स्वागत सबका करत हैं।
सबका स्वागत हम करते हैं।

- डॉ. अशोक कुमार सिंह